

माता काश्या

माता काश्या

वृहस्पतिवा भूत करणा की विधि, समूर्ण कथा, कहानी
एव आरतियों सहित

श्री दुर्गा पुस्तक भारद्वार (प्रा०)लिं०

DESIGNER

ॐ श्री गणेशाय नमः ॐ



दुर्गापूजा व्रत कथा



(वृहस्पतिवार व्रत की विधि, सम्पूर्ण कथा, कहानी एवं आरतियाँ सहित)

प्रकाशक—

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार (प्रा०) लि०

५२७ ई/२, कक्षकड़ नगर (दरियावाद), इलाहाबाद

ब्रांच—जानसेनाराज, इलाहाबाद

website : www.durgapustak.com
email : sampark@durgapustak.com

मूल्य रु० १५ .००

* वृहस्पतिवार के ब्रत की विधि *

वृहस्पतिवार के दिन जो भी स्त्री-पुरुष ब्रत करे उसको चाहिए कि वह दिन में एक ही समय भोजन करे ज्योंकि वृहस्पतेश्वर भगवान् का इस दिन पूजन होता है। भोजन पीले चंदे की दाल आदि का करे परन्तु नमक नहीं खावे और पीले बस्त्र पहिने। पीले ही फलों का प्रयोग करे, पीले चंदन से पूजन करे, पूजन के बाद प्रेमपूर्वक गुरु महराज की कथा सुननी चाहिए। इस ब्रत को करने से मन की इच्छा पूरी होती है और वृहस्पति महाराज प्रसन्न होते हैं। धन, पुत्र, विद्या तथा मनोबांधित फलों की प्राप्ति होती है। परिवार को सुख तथा शान्ति मिलती है, इसीलिए यह ब्रत सर्वश्रेष्ठ और अति फलदायक सभी स्त्री व पुरुषों के लिए है। इस ब्रत में केले का पूजन करना चाहिये। कथा और पूजन के समय मन, कर्म, वचन से शुद्ध होकर जो इच्छा हो वृहस्पतिदेव से प्रार्थना करनी चाहिये। उसकी इच्छाओं को वृहस्पतिदेव अवश्य पूर्ण करते हैं ऐसा जन में दृढ़ विश्वास रखना चाहिये।

* अथ वृहस्पतिवार ब्रत कथा *

एक समय की बात है कि भारतवर्ष में एक राजा राज करता था। वह बड़ा ही प्रतापी और दानी था। वह नित्य प्रति मन्दिर में दर्शन करने को जाता था तथा ब्राह्मण और गुरु की सेवा किया करता था। उसके दरवाजे से कोई भी निराश होकर नहीं लौटता था। वह प्रत्येक गुरुवार को ब्रत रखता एवं पूजन करता था। हर एक दिन गरीबों की सहायता करता था, परन्तु यह सब बातें उसकी रानी को अच्छी नहीं लगती थीं। वह न ब्रत करती और न किसी को एक पैसा तक दान में देती तथा राजा से भी दान करने को मना किया करती थी।

एक समय की बात है कि राजा शिकार खेलने वन में गये थे, घर में रानी और दासियाँ थीं। उस समय गुरु वृहस्पतिदेव एक साधु का ल्प धारण कर राजा के दरवाजे पर भिक्षा माँगने आये तथा भिक्षा माँगी। तब रानी कहने लगी—हे साधु महाराज ! मैं इस दान-पूण्य से तंग आ गई हूँ, मेरे से तो घर का कार्य समाप्त नहीं होता। इस कार्य के लिए तो मेरे पतिदेव ही बहुत हैं। अब आप इस प्रकार की कृपा करें कि सब धन नष्ट हो जावे तथा मैं आराम से रह सकूँ। साधु बोले—हे देवि !

तुम तो बड़ी विचित्र होे । संतान और धन से कोई दुखी नहीं होता । इसको सभी चाहते हैं, पापी श्री पुत्र की और धन की इच्छा करता है । आगर आपके पास धन अधिक हो तो भूखे मनुष्यों को भोजन कराओ, घाऊ लगावाओ, ब्राह्मणों को दान दो, धर्मशाला बनवाओ, कुआँ, तालाब, बावली बाग-बगीचे आदि का निर्माण कराओ । निर्धन मनुष्यों की कुंवारी कल्याओं का विवाह कराओ और अनेकों यज्ञादि कर्म करो । इस प्रकार के कर्म से आपका कुल और आपका नाम परलोक में सार्थक होगा एवं स्वर्ग की प्राप्ति होगी, मगर रानी इन बातों से खुश न हुई । वह बोली - हे साधू महाराज ! मुझे ऐसे धन की आवश्यकता नहीं है जिससे और मनुष्यों को दान देत्या जिसको रखने उठाने में मेरा सारा समय ही बर्बाद हो जावे । साधू ने कहा - हे देवी ! तुम्हारी ऐसी इच्छा है तो ऐसा ही होगा । मैं तुम्हें उपाय बताता हूँ, वैसा ही करना । वृहस्पतिवार के दिन घर को गोबर से लीपना, अपने केशों को धोना, केशों को धोते समय स्नान करना, राजा से कहना वह हजामत करवावें, भोजन में मांस मदिरा खाना, कपड़ा धोबी के यहाँ धुलने डालना । इस प्रकार सात वृहस्पतिवार करने से तुम्हारा सब धन नष्ट हो जायेगा । ऐसा कहकर वहाँ से साधू महाराज अल्पर्धान हो गए । रानी ने साधू के कहने के अनुसार बैसा ही किया । तीन वृहस्पतिवार ही बीते थे कि उसका सब धन नष्ट

हो गया, राजा व रानी भोजन के लिए तरसने लगे तथा सांसारिक भोगों के अभाव से दूखी रहने लगे। तब राजा ने रानी से कहा कि हे रानी! तुम यहाँ पर रहो, मैं दूसरे देश को जाऊँ क्योंकि यहाँ पर मुझे सभी मनुष्य जानते हैं, इसलिए कोई कार्य भी नहीं कर सकता। देश की भीख, परदेश की चोरी के बराबर है, ऐसा कहकर राजा परदेश चला गया। बहाँ जङ्गल जाता तथा लकड़ी काटकर लाता और शहर में बेचता, इस तरह जीवन व्यतीत करते लगा। इधर राजा के घर रानी और दासी दुखी रहने लगी। किसी दिन भोजन मिलता और किसी दिन जल पीकर ही रह जातीं। एक बार रानी और दासी को सात दिन बिना भोजन के व्यतीत हो गये तो रानी ने अपनी दासी से कहा—हे दासी! यहाँ पास ही के नगर में मेरी बहन रहती है। वह बड़ी धनवान है, तू उसके पास जा और वहाँ से पाँच सेर बेज़र माँग ला, जिससे कुछ समय के लिए गुजर हो जावेगी। इस प्रकार रानी की आज्ञा मानकर दासी उसकी बहन के पास गई। रानी की बहिन उस समय पूजन कर रही थी क्योंकि उस दिन वृहस्पतिवार था। जब दासी ने रानी की बहन को देखा तो उससे बोली—हे रानी! मुझे तुम्हारी बहन ने भेजा है, मुझे पाँच सेर बेज़र दे दो। इस प्रकार दासी ने अनेक बार कहा, परन्तु रानी ने कुछ उत्तर नहीं दिया, क्योंकि वह उस समय वृहस्पतिवार ब्रत कथा सुन रही थी। इस प्रकार

जब दासी को किसी प्रकार का उत्तर नहीं मिला तो वह बहुत दुखी हुई एवं क्रोध भी आया और लौटकर रानी के पास आकर बोली—हे रानी ! तुम्हारी बहन तो बहुत ही धनी स्त्री है, वह छोटे मन्द्यों से बात भी नहीं करती ! मैंने उनसे आपका सन्देश कहा तो उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया, मैं चापिस चली आई । रानी बोली—हे दासी ! इसमें उनका कोई दोष नहीं है । जब बुरे दिन आते हैं तब कोई सहारा नहीं देता । अच्छे बुरे का पता आपत्ति में ही लगता है । जो ईश्वर की इच्छा होगी वही होगा । यह सब हमारे भाग्य का दोष है । इधर उस रानी ने देखा कि मेरी बहन की दासी आई थी, परन्तु मैं उससे नहीं बोली, इससे वह बहुत दुखी हुई होगी । यह सोंच कथा को सुन और बिघ्न भगवान का पूजन समाप्त कर एवं प्रसाद पाकर वह रानी बहन के घर चल दी और जाकर अपनी बहन से कहने लगी कि हे बहन ! मैं वृहस्पतिवार का ब्रत कर रही थी, तुम्हारी दासी गई परन्तु जब तक कथा होती है तब तक न उठते हैं, न बोलते हैं । इसलिए मैं न बोली, कहो दासी क्यों गई थी ? रानी बोली—बहन ! मेरे घर अनाज नहीं था । वैसे तुमसे कोई बात छिपी नहीं है इस कारण मैंने दासी को तुम्हारे पास ५ सेर बेजर लेने के लिए भेजा था । रानी बोली—बहन ! देखो, वृहस्पति भगवान सभी की मनोकामना पूर्ण करते हैं । देखो, शायद तुम्हारे घर में अनाज रक्खा हो । इस प्रकार

का बचन जब रानी ने सुना तो घर के अंदर गई और वहाँ पर उसे एक घड़ा ब्रेवर का भरा मिल गया। तब तो रानी और दासी को बहुत ही खुशी हुई। दासी बोली—हे रानी! देखो ऐसे हमको जब अन्न नहीं मिलता तो हम रोज ही ब्रत करते हैं, अगर इनसे ब्रत की विधि और कथा पूछ ली जावे तो उसे हम भी किया करेंगे। तब उस रानी ने अपनी बहन से पूछा—हे बहन! वृहस्पतिवार के ब्रत की कथा कैसे है तथा यह ब्रत कैसे करना चाहिए? रानी की बहन ने कहा—वृहस्पतिवार के ब्रत में चने की दाल व मुनक्का से बिष्णु भगवान का केले की जड़ में पूजन करे तथा दीपक जलावे, पीला भोजन करे तथा कहानी सुने। इस प्रकार से गुरु भगवान प्रसन्न होते हैं। अन्न, पुत्र, धन देते हैं, मनोकामना पूर्ण करते हैं। इस प्रकार रानी और दासी दोनों ने यह निश्चय किया कि वृहस्पति भगवान का पूजन जरूर करेंगी। सातवें दिन जब वृहस्पतिवार आया तो उन्होंने ब्रत रखा, घुड़साल में जाकर चना गुड़ बीन लाई तथा चने की दाल से केले की जड़ तथा बिष्णु भगवान का पूजन किया। अब भोजन पीला कहाँ से आवे, बिचारी बड़ी दुखी हुई परन्तु उन्होंने ब्रत किया। इस कारण गुरु भगवान प्रसन्न हुए, थालों में सुन्दर पीला भोजन लेकर आये और दासी को देकर बोले—हे दासी! यह तुम्हारे और रानी के लिए भोजन है, तुम दोनों करना। दासी भोजन पाकर बड़ी प्रसन्न हुई और

रानी से बोली - चलो रानी जी ! भोजन कर लो । रानी को इस विषय में कुछ पता नहीं था, इसलिए वह दासी से बोली - तू ही भोजन कर क्योंकि तू हमारी व्यर्थ में हँसी उड़ाती हैं । दासी बोली - एक महात्मा भोजन दे गये हैं । रानी कहने लगी - वह भोजन तेरे ही लिये दे गये हैं, तू ही भोजन कर । दासी ने कहा - वह महात्मा हम दोनों को दो थालों में भोजन दे गये हैं, इसलिए हम और तुम, दोनों ही साथ-साथ भोजन करेंगी । इस प्रकार रानी और दासी दोनों ने गुरु भगवान का ब्रत और पूजन करने भोजन प्रारम्भ किया तथा अब वे प्रत्येक वृहस्पतिवार को विष्णु भगवान का ब्रत और पूजन करने लगीं । वृहस्पति भगवान की कृपा से रानी और दासी के पास फिर धन हो गया, तो रानी फिर उसी प्रकार आलस्य करने लगी । तब दासी बोली - देखो रानी ! तुम पहले इस प्रकार आलस्य करती थी, तुम्हें धन के रखने में कष्ट होता था, इस कारण सभी धन नष्ट हो गया । अब गुरु भगवान की कृपा से धन मिला है तो फिर तुम्हें आलस्य होता है । बड़ी मुसीबतों के बाद हमने यह धन पाया है, इसलिए हमें दान-पूण्य करना चाहिये । भूखे मनुष्यों को भोजन कराओ, घाऊँ लगवाओ, ब्राह्मणों को दान दो, कुआँ, तालाब, बावली आदि का निर्माण करवाओ । मंदिर, पाठशाला बनवाकर दान दो, कुँवारी कन्याओं का विवाह कराओ, धन को शुभ धर्मकर्म में लब्ध करे, जिससे तुम्हारे कुल का यश बढ़े

तथा स्वर्ण प्राप्त हो और इससे पितर भी प्रसन्न होंगे । तब रानी ने इस प्रकार के कार्य करने प्रारम्भ किये, तो काफी यश फैलने लगा । एक दिन रानी और दासी विचार करने लगीं, न जाने राजा किस प्रकार से होंगे, उनकी खबर नहीं मिली । गुरु भगवान् से उन्होंने प्रार्थना की और भगवान् ने रात्रि में राजा से स्वप्न में कहा – हे राजन् ! उठ तेरी रानी तुझको याद करती है, अपने देश को छल । राजा प्रातःकाल उठा और मन में विचार करने लगा कि स्त्री जाति खाने और पहिरने की संगिनी होती है, पर भगवान् की आज्ञा मानकर वह अपने नगर के लिए चलने को तैयार हुआ । इससे पूर्व जब राजा परदेश चला गया था तो परदेश में दुखी रहने लगा था । प्रतिदिन जङ्गल में से लकड़ी बीनकर लाता और उन्हें शाहर में बैचकर अपने दुखी जीवन को बड़ी कठिनता से व्यतीत करता था । एक दिन राजा दुखी हो अपनी पुरानी बातें याद करके रोने लगा । तब जङ्गल में से वृहस्पतिदेव एक साधु का स्वर्ण कर आ गये और राजा के पास आकर बोले – हे लकड़हारे ! तुम इस सुनसान जङ्गल में किस चिंता में बैठे हो ? मुझको बतलाओ यह सुन राजा के नेत्रों में जल भर आया और साधु की बन्दना कर बोला – हे प्रभो ! आप सब कुछ जानने बाले हो । इतना कह साधु को अपनी सम्पूर्ण कहानी बतला दी । महात्मा तो दयालु होते हैं । वह उससे बोले – हे राजा ! तुम्हारी स्त्री ने वृहस्पतिदेव

का अपराध किया था, जिस कारण तुम्हारी यह दशा हुई। अब तुम किसी प्रकार की चिंता मत करो। भगवान् तुम्हें पहले से अधिक धनवान् करेगा। देखो तुम्हारी स्त्री ने गुहवार का ब्रत करना प्रारम्भ कर दिया है और तुम मेरा कहा मानकर वृहस्पतिवार का ब्रत करके चले की दाल गुड़ व जल को लोटे में डाल केले का पूजन करो। फिर कथा कहो और सुनो, भगवान् तेरी सब कामनाओं को पूर्ण करेगा। साधु को प्रसन्न देखकर राजा बोला - हे प्रभो ! मुझे लकड़ी बेचकर इतना पैसा नहीं मिलता जिससे भोजन करने के उपरांत कुछ बचा सकूँ। मैंने रात्रि में अपनी रानी को व्याकुल देखा हूँ। मेरे पास कुछ भी नहीं है जिससे उसकी खबर तो मौँग सकूँ और फिर कौन सी कहानी कहूँ यह बात मुझको मालूम नहीं है। साधु ने कहा - हे राजा ! तुम किसी बात की चिंता मत करो। वृहस्पतिवार के दिन तुम रोजाना की तरह लकड़ियाँ लेकर नगर को जाओ। तुमको रोज से दुगुना धन प्राप्त होगा जिससे तुम भली-भाँति भोजन कर लोगे तथा वृहस्पतिदेव की पूजा का सामान भी आ जावेगा। वृहस्पतिदेव की कहानी निम्न प्रकार है।

* वृहस्पतिदेव की कहानी *

प्राचीन काल में एक ब्राह्मण था। वह बहुत निर्धन था, उसके कोई भी संतान नहीं थी। उसकी स्त्री बहुत मलीनता के साथ रहती थी। वह न स्नान करती, न किसी देवता का पूजन करती और प्रातः उठते ही सर्वप्रथम भोजन करती, बाद में कोई अन्य कार्य करती थी। इससे ब्राह्मण देवता बड़े दुखी थे। बेचारे बहुत कुछ कहते थे, किन्तु उसका कोई परिणाम न निकला। भगवान की कृपा से ब्राह्मण की स्त्री के कन्धालपी रत्न पैदा हुई। वह कन्धा अपने पिता के घर में बड़ी होते लगी। वह बालिका प्रातः स्नान करके बिष्णु भगवान का जाप करते लगी, वृहस्पतिवार का ब्रत करते लगी। अपने पूजा पाठ को समाप्त करके पाठशाला जाती तो अपनी मुट्ठी में जौ भरके ले जाती और पाठशाला के मार्ग में डालती जाती। तब ये जौ स्वर्ण के हो जाते थे और लौटते समय उनको बीनकर धर को ले आती थी। एक दिन वह बालिका सूप में उन सोने के जबों को फटक कर साफ कर रही थी उसके पिता ने देख लिया और कहा—हे बेटी! सोने के जबों को फटकने के लिए सोने का सूप होता चाहिए। दूसरे दिन गुरुवार था, इस कन्धा ने ब्रत रखा और वृहस्पतिदेव से प्रार्थना करके

कहा—हे प्रभो ! मैंने आपकी पूजा सञ्चे मन से की हो तो मेरे लिए सोने का सूप दे दो । वृहस्पतिदेव ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली । रोजाना की तरह वह कल्या जौ फैलाती हुई जाने लगी । जब लौटकर जौ बीन रही थी तो वृहस्पतिदेव की कृपा से उसे सोने का सूप मिला । उसे घर ले आई और उससे जौ साफ करने लगी, परन्तु उसकी माँ का बही ढंग रहा । एक दिन की बात है कि वह कल्या सोने के सूप में जौ साफ कर रही थी उस समय नगर का राजपुत्र बहाँ से होकर निकला । इस कल्या के लूप और कार्य को देखकर मोहित हो गया । तब अपने महल आकर भोजन तथा जल त्यागकर उदास हो लेट गया । राजा को जब इस बात का पता लगा तो अपने प्रधानमंत्री के साथ अपने पुत्र के पास गये और बोले—‘हे पुत्र ! तुम्हें किस बात का कष्ट है ? किसी ने आपमान किया है अथवा कोई और जो कारण हो सो कहो ।’ मैं वही कार्य करूँगा जिससे तुम्हें प्रसन्नता हो । अपने पिता की राजकुमार ने बातें सुनी तो वह बोला—‘मुझे आपकी कृपा से न तो किसी बात का दुःख है और न ही किसी ने मेरा अपमान किया है, परन्तु मैं उस लड़की के साथ विवाह करना चाहता हूँ, जो सोने के सूप में जौ साफ कर रही थी । यह सुनकर राजा आश्चर्य में पड़ा और बोला—‘हे बेटा ! इस तरह की कल्या का पता तुम्हीं लगाओ, मैं उसके साथ तेरा विवाह अवश्य करवा दूँगा ।’ राजकुमार

ने उस कल्या के घर का पता बतलाया। तब मंत्री उस कल्या के घर गये और ब्राह्मण देवता का सभी हाल बतलाया। ब्राह्मण देवता राजकुमार के साथ अपनी कल्या का विवाह करने के लिए तैयार हो गये तथा विधि विधान के अनुसार ब्राह्मण कल्या का विवाह राजकुमार के साथ हो गया। कल्या के घर से जाते ही पहले की भाँति उस ब्राह्मण देवता के घर में गरीबी का निवास हो गया। अब भोजन के लिए भी अब बड़ी मुश्किल से मिलता था। एक दिन दुखी होकर ब्राह्मण देवता अपनी पुत्री के पास गये। बेटी ने अपने पिता को दुखी अवस्था में देखा और अपनी माँ का हाल पूछा। तब ब्राह्मण ने सभी हाल कहा। कल्या ने बहुत धून देकर अपने पिता को विदा कर दिया। इस तरह ब्राह्मण का कुछ समय सुख पूर्वक व्यतीत हुआ। कुछ दिन के बाद फिर वही हाल हो गया। ब्राह्मण फिर अपनी कल्या के घर्षा गया और हाल कहा तो कल्या बोली—हे पिता जी! आप माताजी को यहाँ लिवा लाओ, मैं उन्हें विधि बता दूँगी जिससे गरीबी दूर हो जाये। वह ब्राह्मण देवता अपनी स्त्री को साथ लेकर पहुँचे तो पुत्री अपनी माँ को समझाने लगी, हे माता! तुम प्रातः काल उठकर प्रथम स्नानादि करके विष्णु भगवान का पूजन करो तब दरिद्रता दूर हो जायेगी। परन्तु उसकी माँ ने एक भी बात नहीं मानी और प्रातःकाल उठकर अपनी पुत्री व बच्चों के जूलन को खा लिया।

एक दिन उसकी पुत्री को बहुत गुस्सा आया और रात को एक कोठरी में से सभी सामान निकाल कर अपनी माँ को उसमें बन्द कर दिया। प्रातःकाल उसमें से निकाला तथा स्नानादि करके पाठ करवाया तो उसकी माँ की बुद्धि ठीक हो गई और फिर प्रत्येक वृहस्पतिवार को ब्रत करने लगी। इस ब्रत के प्रभाव से उसकी माँ भी बहुत धनवान तथा पुत्रबती हो गई और वृहस्पतिजी के प्रभाव से स्वर्ग को प्राप्त हुई तथा वह ब्राह्मण भी सुखपूर्वक इस लोक के सुख भोग कर स्वर्ग को प्राप्त हुआ। इस तरह कहानी कहकर साधु देवता वहाँ से लोप हो गये। धीरे-धीरे समय व्यतीत होने पर फिर वृहस्पतिवार का दिन आया। राजा जंगल से लकड़ी काटकर नगर में बेचने गया, उस दिन अन्य द्विनों से अधिक पैसा मिला। राजा ने चना गुड़ आदि लाकर गुरुवार का ब्रत किया। उस दिन से उसके सभी क्लेश दूर हुये, परन्तु जब दुबारा गुरुवार आया तो वृहस्पतिवार ब्रत करना भूल गया, इस कारण वृहस्पति भगवान नाराज हो गये। उस दिन नगर के राजा ने विशाल यज्ञ का आयोजन किया तथा नगर में घोषणा करा दी कि कोई भी मनुष्य अपने घर भोजन न बनावे, न आग जलावे, समस्त नागरिक ने यहाँ भोजन करने आवे। इस आज्ञा को जो न मानेगा उसे दंड दिया जायेगा, इस तरह की घोषणा सम्पूर्ण नगर में करवा दी गई। राजा की आज्ञानुसार नगर के लोग भोजन करने

गये, लेकिन लकड़हारा कुछ दर से पहुँचा, इसलिये राजा उसको अपने साथ लिवा ले गये और ले जाकर भोजन करा रहे थे तो रानी की दूषि उस खूंटी पर पड़ी जिस पर उसका हार लटका हुआ था, वहाँ हार दिखाई नहीं दिया, रानी ने निश्चय किया कि मेरा हार इस मनुष्य ने चुरा लिया है। उसी समय सिपाही को बुलवाकर उसको कारागार में डलवा दिया। जब लकड़हारा कारागार में पड़ गया तो बहुत दूखी होकर विचार करने लगा कि न जाने कौन से पूर्व जन्म के कर्म से मेरे लिये यह दुःख प्राप्त हुआ है और उसी साधु के लिये याद करने लगा जो कि ज़ज़ल में मिला था। उसी समय तत्काल वृहस्पतिदेव साधु के लिये प्रकट हो गये और उसकी दशा देखकर कहने लगे—अरे मूर्ख! तूने वृहस्पति देवता की कथा नहीं कही, इस कारण तेरे लिये दुःख प्राप्त हुआ है। अब चिन्ता मत कर, वृहस्पतिवार के दिन कारागार के द्वार पर चार पैसे पड़े मिलेंगे, उनसे तू वृहस्पतिदेव की पूजा करना, तेरे सभी कष्ट दूर हो जायेंगे। वृहस्पतिवार के दिन उसे चार पैसे पड़े मिले, लकड़हारे ने कथा कही। उसी रात्रि को वृहस्पतिदेव ने उस नगर के राजा से स्वप्न में कहा—हे राजा! तुमने जिस आदमी को कारागार में बंद कर दिया है, वह निर्दोष है। वह राजा है उसे छोड़ देना, रानी का हार उसी खूंटी पर लटका हुआ है। तू ऐसा नहीं करेगा तो मैं तेरे राज्य को नष्ट कर दूँगा। इस रात्रि के

स्वप्न को देख राजा प्रातःकाल उठा और खुँटी पर हार देख लकड़िहारे से क्षमा माँगी तथा राजा के गोप्य सुन्दर वस्त्र आभूषण देकर उसे विदा किया। गुरुदेव की आज्ञानुसार राजा अपने नगर को चल दिया। जब राजा नगर के निकट पहुँचा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। नगर में पहिले से अधिक बाग, तालाब, कुर्यें तथा बहुत से धर्मशाला व मन्दिर आदि बन गये थे। राजा ने पूछा—यह किसका बाग व किसकी धर्मशाला है? तब नगर के सब लोग कहने लगे, यह रानी और दासी के हैं, तो राजा को आश्चर्य हुआ और गुस्सा भी आ गया। जब रानी ने यह खबर सुनी कि राजा आ रहे हैं तो उसने दासी से कहा कि दासी! राजा हमको कितनी बुरी हालत में छोड़कर गये थे। वह हमारी ऐसी हालत देखकर लौट न जाय। इसलिये तू दरवाजे पर खड़ी हो जा। रानी की आज्ञानुसार दासी दरवाजे पर खड़ी हो गई और राजा आया तो उन्हें अपने साथ लिवा ताई। तब राजा ने क्रोध करके अपनी तलवार निकाली और पूछने लगे, यह बताओ कि यह धन तुम्हें कैसे प्राप्त हुआ? तब रानी ने कहा—हमें यह धन वृहस्पतिदेव के ब्रत के प्रभाव से प्राप्त हुआ है। राजा ने निश्चय किया कि छः दिन ब्राद तो सभी वृहस्पतिदेव का पूजन करते हैं, परन्तु मैं रोजाना दिन में तीन बार कहानी कहा करूँगा तथा रोज ब्रत किया करूँगा। अब हर समय राजा के दुपट्टे में चने की वाल बैंधी रहती तथा दिन

में तीन बार कहानी कहता। एक दिन राजा ने विचार किया कि चलो अपनी बहन के यहाँ हो आवं
ऐसे निश्चय कर राजा घोड़े पर सवार हो अपनी बहन के पहाँ चलने लगा। मार्ग में उसने देखा कि
कुछ आदमी एक मुर्दे को लिये जा रहे हैं तो उन्हें रोकर कहने लगा - और भाइयों! मेरी वृहस्पतिदेव
की कहानी सुन लो। वे बोले - लो, हमारा तो आदमी मर गया है, इसको कथा की पढ़ी है, परंतु
कुछ आदमी बोले - अच्छा कहो, हम तुम्हारी कथा भी सुनेंगे। राजा ने दाल निकाली और जब कथा
आधी ही हुई थी कि मुर्दा हिलने लगा और जब कथा समाप्त हो गई तो राम-राम करके वह मनुष्य
उठ खड़ा हुआ। आगे मार्ग में उसे एक किसान खेत में हल चलाता मिला। राजा ने उसे देखा और
उससे बोला - ओर भइया! तुम वृहस्पतिवार की कथा सुन लो। किसान बोला, जब तक मैं तेरी कथा
सुनूँगा तब चार हैरण्या जोत लूँगा, जा अपनी कथा किसी और को सुना। इस तरह राजा आगे को
चलने लगा। राजा के हटते ही बैल पछाड़ खाकर गिर गये तथा उसके पेट में जोर का दर्द होने लगा।
उसी समय उसकी माँ रोटी लेकर आई। उसने जब यह देखा तो अपने पुत्र से मब हाल पूछा और
बेटे ने सभी हाल कह दिया, तो बुढ़िया दौड़ी-दौड़ी धुङ्गसवार के पास गई और उसने बोली - मैं
तेरी कथा सुनूँगी, तू अपनी कथा मेरे खेत पर चलकर कहना। राजा ने बुढ़िया के खेत पर जाकर

कथा कही जिसके सुनते ही वह बैल खड़े हो गये तथा किसान के पेट का दर्द ठीक हो गया । राजा अपनी बहन के घर पहुँचा तो बहन ने भाई की खुब मेहमानी की । दूसरे रोज प्रातःकाल राजा जागा तो वह देखते लगा कि सब लोग भोजन कर रहे हैं । राजा ने अपनी बहन से कहा — ऐसा कोई मनुष्य है जिसने भोजन नहीं किया हो, मेरी वृहस्पतिवार की कथा सुन ले । बहन बोली — हे भैया ! यह देश ऐसा ही है कि पहले यहाँ लोग भोजन करते हैं बाद में अन्य काम करते हैं, आगर कोई पड़ोस में हो तो देख आँ, वह ऐसा कहकर देखते चली गई, परन्तु उसे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जिसने भोजन न किया हो । अतः वह पता लगाते-लगाते एक कुम्हार के घर गई जिसका लड़का बीमार था । उसे मालूम हुआ कि उसके यहाँ तीन दिन से किसी ने भोजन नहीं किया । रानी ने अपने भाई की कथा सुनते के लिये कुम्हार से कहा, वह तैयार हो गया । राजा ने जाकर वृहस्पतिवार की कथा कही जिसको सुनकर उसका लड़का ठीक हो गया । अब तो राजा की प्रशंसा होते लगी । एक दिन राजा ने अपनी बहन से कहा कि हे बहन ! हम अपने घर को जावेंगे, तुम भी तैयार हो जाओ । राजा की बहन ने अपनी सास से कहा । सास बोली — हाँ चली जा, परन्तु लड़कों को मत ले जाना क्योंकि तेरे भाई के कोई औलाद नहीं होती है । बहन ने अपने भइया से कहा — हे भइया ! मैं तो चलूँगी पर

कोई बालक नहीं जायेगा। राजा बोला - जब कोई बालक नहीं चलेगा तब तुम्हां चलकर
 करोगी? बड़े दूखी मन से राजा अपने नगर को लौट आया। राजा ने अपनी रानी से कहा - हम निर्वशी
 हैं, हमारा मुह किसी को देखने का धर्म नहीं है, और कुछ भोजन आदि नहीं किया। रानी बोली - है
 प्रभो! वृहस्पतिदेव ने हमें सब कुछ दिया है, हमें पुत्र भी अवश्य देंगे। उसी रात वृहस्पति देव ने
 राजा से स्वप्न में कहा - हे राजा! उठ, सभी सोच को त्याग दे, तेरी रानी गर्भ से है। राजा को
 यह बात सुनकर बड़ी खुशी हुई। जब नौ महीने में उसके गर्भ से एक सुन्दर पुत्र पैदा हुआ तब राजा
 बोला - हे रानी! स्त्री बिना भोजन के रह सकती है, किन्तु बिना बात कहे नहीं रह सकती। जब
 मेरी बहन आये तो तुम उससे कुछ कहना मत। रानी ने हाँ कर दिया। राजा की बहन ने शुभ समाचार
 सुना तो वह बहुत खुश हुई तथा बधाई लेकर अपने भाई के घर्हाँ आई। तब रानी ने कहा - घोड़ा
 चढ़कर तो नहीं आई, गधा चढ़ी आई। राजा की बहन बोली - भाभी! मैं इस प्रकार न कहती तो
 तुम्हें औलाद कैसे मिलती। वृहस्पति देव ऐसे ही है, जैसी जिनके मन में कामनायें हैं सभी को पूर्ण
 करते हैं, जो सद्भावना पूर्वक वृहस्पति देव का ब्रत करता है एवं कथा कहता अथवा सुनता है और
 दूसरों को सुनाता है, वृहस्पतिदेव उसकी सभी मनोकामना पूर्ण करते हैं। भगवान् वृहस्पति देव उसकी

सदैव रक्षा करते हैं। सांसार में जो सद्भावना से भगवान का पूजन व ब्रत सञ्चे हृदय से करते हैं, उनकी सभी मनोकामनायें वे पूर्ण करते हैं, जैसे सच्ची भावना से रानी और राजा ने उनकी कथा का गुणात् किया तो उनकी सभी इच्छायें वृहस्पतिदेव जी ने पूर्ण की थीं। इसलिये सब को कथा सुनते के बाद प्रसाद लेकर जाना चाहिये। हृदय से उनका मनन करते हुये जयकार बोलना चाहिये।

बोलो वृहस्पति देव की जय! बिष्णु भगवान की जय!

॥ इति ॥

* आरती वृहस्पतिदेव की *

ॐ जय वृहस्पति देवा जय वृहस्पति देवा * छिन छिन भोग लगाऊँ फल मेवा ॥३०॥
 तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी * जगत पिता जगदीश्वर तुम सबके स्वामी ॥३०॥
 चरणामृत निज निर्मल, सब पातक हर्ता * सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्ता ॥३०॥
 तन, मन, धन, अर्पणकर जो जन शरण पढ़े * प्रभु प्रकट तब होकर, आकर ह्वार खड़े ॥३०॥
 दीन दयाल दयानिधि भक्तन हितकारी * पाप दोष सब हर्ता, भव बन्धन हारी ॥३०॥
 सकल मनोरथ दायक, सब संशय टारी * विषय विकार मिटाओ सत्तन सुखकारी ॥३०॥
 जो कोई आरति तेरो प्रेम सहित गावे * जेठानन्द बन्दि गुरु को निश्चय फल पावे ॥३०॥
 सब बोलो विष्णु भगवान की जय ! बोलो भगवान वृहस्पतिदेव की जय !!

* लक्ष्मी जी की आरती *

ॐ जय लक्ष्मी माता, जय लक्ष्मी माता, तुमको निशिदिन ध्यावत हर विष्णु धाता ॥ टेक० ॥
 उमा, रमा, ब्रह्मानी तुम ही जग माता, सूर्य चत्व्रमा नारद ऋषि गाता ॥ जय० ॥
 दुर्गा ल्प निरअनि सुख सम्पति दाता, जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ॥ जय० ॥
 तुम पाताल निवासिनि तुम ही शुभ दाता, कर्म प्रभाव प्रकाशिनि भवनिधि की त्राता ॥ जय० ॥
 जिस घर थारी वास तेही में गुण आता, कर सके कोई कर ले मन नहीं धड़काता ॥ जय० ॥
 तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न कोई पाता, तुम बिन मिले न खाने को वैभव गुण गाता ॥ जय० ॥
 शुभ गुण सुन्दर मुक्ता और निधि जाता, रत्न चतुर्दश तोको कोई नहीं पाता ॥ जय० ॥
 ये आरती लक्ष्मी जी की जो कोई गाता, उर आनन्द अति उमड़े पार उत्तर जाता ॥ जय० ॥
 जय लक्ष्मी माता, जय लक्ष्मी माता, तुमको निशि दिन ध्यावत हर विष्णु धाता ॥ जय० ॥

* श्री सत्यनारायण जी की आरती *

जय श्री लक्ष्मी रमणा जय श्री लक्ष्मी रमणा, सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा ॥ टेक०॥
 गल जैवं सिंहासन अद्भुत छबि राजे, नारद करते गान निरन्तर घंटा ध्वनि बाजे ॥ जय०॥
 प्रकट येहं लि कारण द्विज को दर्श दियो, बुद्धो ब्राह्मण बनकर कंचन महल कियो ॥ जय०॥
 दर्बल भील कठोरा जिन पर कृपा करी, चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपति हरी ॥ जय०॥
 श्री य मनि थ पायो श्रद्धा तज दीनी, सो भल भोग्यो प्रभु जी फिर सुति कीनी ॥ जय०॥
 श्रवन किं भ आरण छिन-२ ल्प धरयो, श्रद्धा धारण कीनी जिनने तिनका काज सरयो ॥ जय०॥
 लक्ष्म व्रत संग राजा बन में भक्ति करी, मन बांछित फल दीना दीन ह्याल हरी ॥ जय०॥
 चढ़ प्रता सवायो कदली फल मेव, धूप दीप तुलसी से राजी राजा सत्य देवा ॥ जय०॥
 गो स्वर्यताम् प्रणजि की जो आरति गावे, भणत दास मान सुख संपति मनबांछित फल पाव ॥ जय०॥